आगे बढ़ती महिलाएँ: कैसे वेदांता के व्यवसाय भारत के प्राकृतिक संसाधन क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ा रहे हैं

भास्कर समाचार सेवा

नई दिल्ली। वेदांता ग्रुप में लैंगिक विविधता कोई छोटी पहल नहीं है, बल्कि यह कंपनी की कामकाजी उत्कृष्टता और लंबे समय तक टिकाऊ विकास का एक महत्वपूर्ण आधार है। आज कंपनी के कुल कर्मचारियों में 23 प्रतिशत महिलाएँ हैं, जो यह दिखाता है कि कंपनी ने समावेशन को अपनी विकास रणनीति का मुख्य हिस्सा बनाया है। समूह के अलग-अलग व्यवसायों में महिलाएँ अब तकनीकी, संचालन और नेतृत्व की भूमिकाओं में तेजी से आगे बढ़ रही हैं और उन उद्योगों की दिशा बदल रही हैं, जहाँ पहले ज्यादातर पुरुष ही काम करते थे। माइनिंग उद्योग में नए मानक स्थापित करना इस प्रतिबद्धता का एक मजबूत उदाहरण हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड एचजेडएल है, जो वेदांता लिमिटेड की सहायक कंपनी है और दुनिया की सबसे बड़ी एकीकृत जिंक उत्पादक कंपनी है। एचजेडएल ने भारत के धातु और खनन क्षेत्र में एक नया मानक स्थापित किया है, जहाँ लगभग 26.3 प्रतिशत कर्मचारी महिलाएँ हैं जो इस उद्योग में सबसे अधिक है। कंपनी के संचालन में 745 से अधिक महिलाएँ काम कर रही हैं, जिनमें से 314 से ज्यादा महिलाएँ तकनीकी भूमिकाओं में हैं, जैसे इंजीनियरिंग, भूविज्ञान, धातुकर्म और प्लांट संचालन। ये उपलब्धियाँ ऐसे उद्योग में बड़ा बदलाव दिखाती हैं, जहाँ पहले महिलाओं की भागीदारी बहुत कम थी। मुख्य कामों में बाधाओं को तोड़ती महिलाएं हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड एचजेडएल ने खदानों के मुख्य कामों में महिलाओं को शामिल

करने की दिशा में अग्रणी पहल की है। 2023 में कंपनी ने भारत की पहली पूरी तरह महिलाओं की अंडरग्राउंड माइन रेस्क्यू टीम बनाई। इस टीम ने अंतर्राष्ट्रीय खदान बचाव प्रतियोगिता में दूसरा स्थान हासिल करके वैश्विक स्तर पर पहचान भी बनाई। यह प्रतियोगिता कोलंबिया में आयोजित हुई थी। इस सफलता के बाद कंपनी ने इस पहल को आगे बढ़ाते हुए रामपुरा आगूचा, जावर, सिंदेसर खुर्द और राजपुरा दरीबा में अपनी इकाइयों में चार पूरी तरह महिलाओं की रेस्क्यू टीमें बनाई। इससे देश में ऐसे विशेष रेस्क्यू टीमों की सबसे ज्यादा संख्या यहीं बन गई। 24 घंटे चलने वाले खदान कार्य को नए तरीके से परिभाषित करना कंपनी भारत की पहली भूमिगत खनन कंपनी भी बनी जिसने महिलाओं के लिए बैक शिफ्ट शुरू की। आज महिलाएं नाइट शिफ्ट कंट्रोल रूम संभालती हैं, उत्पादन इकाइयों की निगरानी करती हैं और काम से जुड़े फैसले तुरंत लेती हैं। कंपनी के लगभग 60 प्रतिशत कर्मचारी शुरूआती करियर के पेशेवर हैं, और एचजेडएल वर्ष 2030 तक 30 प्रतिशत जेंडर विविधता हासिल करने के अपने लक्ष्य की ओर लगातार आगे बढ़ रही है। कार्यस्थल के बाहर भी समुदायों को सशक्त बनाना। हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड की समावेशिता के प्रति प्रतिबद्धता केवल अपने कर्मचारियों तक ही सीमित नहीं है। सखी पहल के माध्यम से कंपनी ने वित्तीय वर्ष25 में लगभग 2,500 गांवों की 25,000 से अधिक ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाया। इसके तहत महिलाओं द्वारा चलाए जा रहे स्वयं सहायता समूहों और छोटे व्यवसायों को प्रशिक्षण, बाजार से जोड़ने और सखी उत्सव जैसे मंच उपलब्ध कराए गए। भारत के ऊर्जा संचालन को आगे बढ़ा रही महिलाएँ एक ऐसा ही बदलाव केर्न ऑयल एंड गैस में भी देखा जा रहा है, जो वेदांत की एक अन्य सहायक कंपनी है। मंगला प्रोसेसिंग टर्मिनल में महिलाएँ 2019 से नाइट शिफ्ट में काम कर रही हैं और जटिल 24/7 हाइड्रोकार्बन प्रोसेसिंग सिस्टम संभाल रही हैं, जिससे भारत की एक महत्वपूर्ण ऊर्जा संपत्ति में उत्पादन बिना रुके जारी रहता है। केर्न ऑयल एंड गैस ने दुर्गा वाहिनी की भी शुरूआत की, जो अपने तरह की पहली पूरी तरह महिलाओं की सुरक्षा टीम है और इसमें ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को भर्ती किया गया है। आज ये महिलाएँ क्विक रिस्पॉन्स टीम के रूप में 38 तेल-क्षेत्र स्थलों की सुरक्षा कर रही हैं। इन्हें आपातकालीन स्थिति से निपटने, संकट प्रबंधन और फील्ड सुरक्षा प्रोटोकॉल का प्रशिक्षण दिया गया है, ताकि महत्वपूर्ण ऊर्जा ढांचे की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। महिला नेता तकनीकी फैसलों को भी आकार दे रही हैं। सुलक्षना, जो केर्न ऑयल एंड गैस में राजस्थान नॉर्थ की जियोलॉजी और जियोफिजिक्स हेड हैं, राजस्थान के बारमेर बेसिन में स्थित मंगला, भाग्यम और ऐश्वर्या क्षेत्रों में डेटा-आधारित वेल प्लेसमेंट को आगे बढ़ा रही हैं। उनकी टीम के काम से कुओं की गहराई लगभग 80 मीटर तक कम हुई, मंगला फील्ड में चार साइड-ट्रैक वेल टारगेट विकसित हुए और करीब 800 बैरल अतिरिक्त तेल जोड़ा गया, जिससे उत्पादन की स्थिरता और मजबूत हुई। वेदांता एल्युमिनियम में जेंडर विविधता अब उसकी कार्यबल रणनीति का एक अहम स्तंभ बनती जा रही है। फिलहाल कंपनी के कुल कर्मचारियों में 21 प्रतिशत महिलाएं हैं और 2030 तक इसे 30 प्रतिशत तक बढ़ाने का स्पष्ट लक्ष्य तय किया गया है। अनिल अग्रवाल के प्रोत्साहन से कंपनी ने अब एक नया लक्ष्य भी तय किया है।